आज खत्म हो रही अमृत-कलश स्कीम : इसमें सीनियर सिटिजन को 7.60प्रतिशत और अन्य को मिल रहा 7.10प्रतिशत सालाना ब्याज

नई दिल्ली।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की स्पेशल फिक्स डिपॉजिट स्कीम अमृत कलश यानी 15 अगस्त को खत्म हो रही है। इस स्कीम के तहत सीनियर सिटिजन को एफडी पर 7.60प्रतिशत और अन्य को 7.10प्रतिशत सालाना ब्याज दिया जा रहा है। इस फिक्स डिपॉजिट स्कीम में 400 दिन के लिए निवेश करना होता है। ऐसे में अगर आप एफडी पर ज्यादा ब्याज चाहते हैं तो इस स्कीम में निवेश कर सकते हैं। हम आपको इसके बारे में बता रहे हैं।

ये एक स्पेशल टर्म डिपॉजिट - अमृत कलश एक स्पेशल रिटेल टर्म डिपॉजिट यानी एफडी है। इसमें सीनियर सिटिजन को 7.60प्रतिशत और आम नागरिकों को 7.10प्रतिशत के दर से इंटरेस्ट रेट मिलता है। इसमें अधिकतम 2 करोड़ रुपए की एफडी करा सकते हैं। अमृत कलश स्कीम के तहत आपको ब्याज का भुगतान प्रति महीना, प्रति तिमाही और हर छमाही किया जाता है। आप अपनी सुविधा के अनुसार एफडी ब्याज का पेमेंट तय कर सकते हैं।

ऑनलाइन या ऑफलाइन कर सकते हैं निवेश - इस स्कीम में निवेश करने के लिए आप बैंक के ब्रांच जाकर भी निवेश कर सकते है। वहीं नेटबैंकिंग और सेबी योनो ऐप के जरिए भी इसमें निवेश किया जा सकता है। अमृत कलश पर आम एफडी की तरह ही लोन लेने की सुविधा भी मिलती है।

सेबी वीकेयर स्कीम में भी 30 सितंबर तक कर सकेंगे निवेश - सेबी ने अपनी एक अन्य स्पेशल टर्म डिपॉजिट स्कीम वीकेयर की लास्ट डेट को भी आगे बढ़ाया है। अब इस स्कीम में 30 सितंबर 2023 तक निवेश किया जा सकता है। सेबी की इस स्कीम में सीनियर सिटीजन को 5 साल या उससे ज्यादा की अवधि के डिपॉजिट पर 50 बेसिस पॉइंट्स का एक्स्ट्रा ब्याज मिलेगा। सीनियर सिटिजन को 5 साल से कम के रिटेल टर्म डिपॉजिट पर आम पब्लिक के मुकाबले 0.50प्रतिशत ज्यादा ब्याज मिलता है। वहीं वीकेयर डिपॉजिट स्कीम के तहत 5 साल या इससे ज्यादा की एफडी पर 1प्रतिशत ब्याज मिलेगा। हालांकि, मैच्योरिटी से पहले निकासी पर अतिरिक्त ब्याज नहीं दिया जाएगा। एक्सिस बैंक ने फिक्स्ड डिपॉजिट पर मिलने वाले ब्याज में बढ़ोतरी की है। बैंक ने इंटरेस्ट रेट्स 2 करोड़ रुपए से कम की एफडी पर रिवाइज्ड किए हैं।

न्यूज ब्रीफ

अडाणी-हिंडनबर्ग केस- सेबी ने 15 दिन और वक्त मांगा: सुप्रीम कोर्ट में पेश करनी थी रिपोर्ट, 29 अगस्त को अगली सुनवाई

नई दिल्ली। मार्केट रेगुलेटर सेबी ने अडाणी-हिंडेनबर्ग मामले की जांच पूरी करने और अपनी रिपोर्ट सौंपने के लिए सुप्रीम कोर्ट से 15 दिन का और समय मांगा है। यह दूसरी बार है जब सेबी ने शीर्ष अदालत से इस मामले की जांच के लिए अतिरिक्त समय मांगा है। सेबी ने बताया कि वह अडाणी ग्रुप के 24 ट्रांजैक्शन की जांच कर रही है, जिसमें से 17 की जांच पूरी हो चुकी है। इसके साथ ही इस मामले के बारे में अन्य रेगुलेटर्स और दूसरे देशों से और जानकारी मांगी गई है। अब सुप्रीम कोर्ट इस मामले की अगली सुनवाई 29 अगस्त को करेगा। 2 मार्च को सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में एक कमेटी बनाई थी और सेबी को भी जांच के लिए 2 महीने का समय दिया था। मार्केट रेगुलेटर को 2 मई तक अपनी रिपोर्ट सौंपनी थी, लेकिन सेबी की ओर से कोर्ट में पेश सॉलिसिटर जनरल ऑफ इंडिया तुषार मेहता ने सुनवाई के दौरान जांच के लिए 6 महीने की मोहलत मांगी थी। हालांकि, बेंच ने 6 महीने का समय देने से इनकार कर दिया था। बेंच ने कहा था कि वह अनिश्चित विस्तार नहीं दे सकती। हमने 2 महीने का समय दिया था और अब इसे अगस्त तक बढ़ा दिया है। यानी सेबी को कुल 5 महीने का समय मिल चुका है। सुप्रीम कोर्ट की कमेटी अडाणी-हिंडनबर्ग मामले की जांच रिपोर्ट 19 मई 2023 को सार्वजनिक कर चुकी है। कमेटी ने कहा था कि अडाणी के शेयरों की कीमत में कथित हेरफेर के पीछे सेबी की नाकामी थी, अभी इस नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सकता। कमेटी ने ये भी कहा था कि ग्रुप की कंपनियों में विदेशी फंडिंग पर सेबी की जांच बेनतीजा रही है। कमेटी ने रिपोर्ट में कहा- सेबी को संदेह है कि अडाणी ग्रुप में निवेश करने वाले 13 विदेशी फंडों के प्रमोटर्स के साथ संबंध हो सकते हैं।

एफडी पर ज्यादा ब्याज पाने का यह सही समय, तीन साल पैसा फिक्स्ड करना है फायदेमंद

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक ने लगातार तीसरी बार इस हफ्ते रेपो दर को 6.50 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखा है। दरों में वृद्धि एफडी निवेशकों के लिए बेहतर फैसला हो सकता था। हालांकि, केंद्रीय बैंक के ताजे फैसले से आने वाले समय में एफडी पर ब्याज दरें कम होने लगेंगी। लंबे समय के लिए पैसा फिक्स्ड करने के फायदे का गणित बताती अजीत सिंह की रिपोर्ट- विश्लेषकों के मुताबिक, भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के तीसरी बार दरों को अपरिवर्तित रखने के फैसले से अभी भी समय है कि आप फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) पर ज्यादा ब्याज ले सकें। एफडी निवेश के लिए एक से तीन साल की समय सीमा को सबसे फायदेमंद अवधि माना जाता है। हाल के समय में एफडी में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया, क्योंकि मई 2022 में जब आरबीआई ने रेपो दर में बढ़ोतरी शुरू की तो बैंकों ने भी लगातार ब्याज दरें बढ़ानी शुरू कर दी थी। पिछले 10 महीनों में केंद्रीय बैंक ने फरवरी 2023 तक 2.5 प्रतिशत रेपो दर में बढ़ोतरी की। इस दौरान फिक्स्ड डिपॉजिट की दरें भी 9 प्रतिशततक पहुंच गई थी। पिछले तीन बार से रेपो दर में कोई वृद्धि नहीं होने से बैंक अब एफडी पर मिलने वाले ब्याज में कटौती कर सकते हैं। सूर्योदय स्मॉल फाइनेंस बैंक अभी भी 8.60 फीसदी ब्याज एफडी पर दे रहा है। इसकी वेबसाइट के मुताबिक, एक साल के जमा पर 6.85 फीसदी, एक साल से 15 माह तक के जमा पर 8.25 फीसदी और 15 माह से दो साल के जमा पर 8.50 प्रतिशत ब्याज दे रहा है। दो साल से तीन साल के जमा पर 8.60 प्रतिशत तक ब्याज दे रहा है। एक्सिस बैंक दो साल से 30 माह तक के जमा पर 7.20 फीसदी ब्याज दे रहा है। जबकि 13 महीने से ज्यादा पर 7.10 फीसदी और 30 माह से तीन साल के जमा पर 7 प्रतिशत का ब्याज दे रहा है। एचडीएफसी बैंक 4 साल से 55 महीने की अवधि पर 7.25 फीसदी ब्याज दे रहा है। आईसीआईसीआई बैंक 15 से 18 महीने की अवधि पर 7.10 प्रतिशत ब्याज दे रहा है। बैंकों के एफडी पर दरों में कटौती से यह संकेत मिल रहा है कि वे आगे भी इसे जारी रखेंगे। एफडी दरें कई कारकों से प्रभावित होती हैं। इनमें रेपो दर, कर्ज और जमा के बीच भारी अंतर और बैंकों की तरलता प्रमुख हैं। जहां तक तरलता की बात है तो 2000 रुपये के नोट को चलन से वापस लेने के बाद बैंकों के पास भरपूर तरलता आ गई है। यही कारण है कि आरबीआई ने बैंकों से एक लाख करोड़ रुपये की अतिरिक्त तरलता वापस लेने का कदम उठाया है। पिछले साल जब रेपो दर बढ़ रही थी, तब बैंकों का कर्ज 17 फीसदी बढ़ा था, जबकि जमा 10 फीसदी बढ़ा था।

चंद्रमा के और करीब पहुंचा चंद्रयान-3 : अब उसकी चंद्रमा से सबसे कम दूरी केवल 150 केएम, लैंडिंग 23 अगस्त को होगी

बेंगलुरु।

इसरो ने तीसरी बार चंद्रयान-3 की ऑर्बिट घटाई। अब चंद्रयान 150 केएम × 177 केएम की ऑर्बिट में आ गया है। यानी चंद्रयान-3 चंद्रमा की ऐसी कक्षा में घूम रहा है, जिसमें उसकी चांद से सबसे कम दूरी 150 केएम और सबसे ज्यादा दूरी 177 केएम है। ऑर्बिट घटाने के लिए यान के इंजन कुछ देर चालू किए गए। अब चंद्रयान का ऑर्बिट सर्कुलराइजेशन फेज शुरू हो गया है। यानी चंद्रयान अंडाकार कक्षा से गोलाकार कक्षा में आना शुरू हो गया है। इसरो अब 16 अगस्त को सुबह 08:30 बजे अगला ऑपरेशन परफॉर्म करेगा। इसमें इसरो के बेंगलुरु स्थित हेडक्वार्टर से वैज्ञानिक चंद्रयान के थ्रस्टर फायर कर उसे 100 केएम एक्स 100 केएम की गोलाकार कक्षा में लाएंगे। 17 अगस्त को चंद्रयान के लिए काफी अहम दिन है। इस दिन इसरो चंद्रयान-3 के प्रोपल्शन मॉड्यूल को लैंडर से अलग करेगा। फिर 23 अगस्त को शाम करीब 05:30 बजे लैंडर चांद की सतह पर लैंड करेगा। इससे पहले 9 अगस्त को चंद्रयान की ऑर्बिट घटाई गई थी, जिसके बाद ये 174 केएम × 1437 केएम की ऑर्बिट में आ गया था।

5 अगस्त को चंद्रमा की कक्षा में पहुंचा था यान - 22 दिन के सफर के बाद चंद्रयान 5 अगस्त को शाम करीब 7:15 बजे चंद्रमा की कक्षा में पहुंचा था। तब यान चंद्रमा की ग्रैविटी में कैप्चर हो सके, इसके लिए उसकी स्पीड कम की गई थी। स्पीड कम करने के लिए इसरो वैज्ञानिकों ने यान के फेस को पलटकर थ्रस्टर 1835 सेकेंड यानी करीब आधे घंटे के लिए फायर किए। ये फायरिंग शाम 7:12 बजे शुरू की गई थी।

चंद्रयान ने चांद की तस्वीरें कैप्चर कीं - चंद्रयान ने जब पहली बार चंद्रमा की कक्षा में एंट्री की थी तो उसकी ऑर्बिट 164 केएम × 18,074 केएम थी। ऑर्बिट में प्रवेश करते समय उसके ऑनबोर्ड कैमरों ने चांद की तस्वीरें भी कैप्चर की थीं। इसरो ने अपनी वेबसाइट पर इसका एक वीडियो बनाकर शेयर किया। इन तस्वीरों में चंद्रमा के क्रेटर्स साफ-साफ दिख रहे हैं।

मैं चंद्रयान-3 हूं... मुझे चांद की ग्रैविटी महसूस हो रही है - मिशन की जानकारी देते हुए इसरो ने एक्स पोस्ट में चंद्रयान के भेजे मैसेज को लिखा था, मैं चंद्रयान-3 हूं... मुझे चांद की ग्रैविटी महसूस हो रही है। इसरो ने यह भी बताया था कि चंद्रयान-3 सफलतापूर्वक चंद्रमा की कक्षा में स्थापित हो गया है। 23 अगस्त को

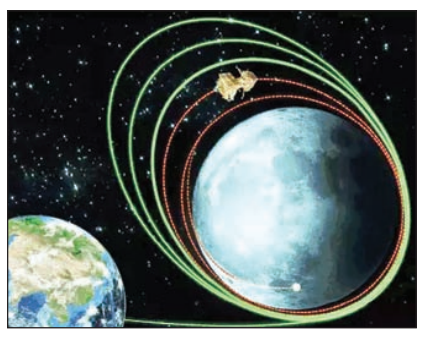

लैंडिंग से पहले चंद्रयान को कुल 4 बार अपनी ऑर्बिट कम करनी है। वो एक बार ऑर्बिट कम कर चुका है।

थ्रस्टर तब फायर किए जब ऑर्बिट में चंद्रमा के सबसे करीब था चंद्रयान इसरो ने बताया था कि पेरिल्यून में रेट्रो-बर्निंग का कमांड मिशन ऑपरेशंस कॉम्प्लेक्स बेंगलुरु से दिया गया था। पेरिल्यून यानी वह पॉइंट जिस पर चंद्र कक्षा में एक यान चंद्रमा के सबसे करीब होता है। रेट्रो-बर्निंग यान के थ्रस्टर को अपोजिट डायरेक्शन में फायर करने को कहा जाता है। यान की स्पीड धीमी करने के लिए अपोजिट डायरेक्शन में थ्रस्टर फायर किए जाते हैं।

चंद्रमा पर 14 दिन तक प्रयोग करेंगे लैंडर और रोवर - चंद्रयान 23 अगस्त को चंद्रमा पर लैंड करेगा। इसमें लैंडर, रोवर और प्रोपल्शन मॉड्यूल हैं। लैंडर और रोवर चांद के साउथ पोल पर उतरेंगे और 14 दिन तक प्रयोग करेंगे। प्रोपल्शन मॉड्यूल चंद्रमा की कक्षा में रहकर धरती से आने वाले रेडिएशन्स का अध्ययन करेगा। इस मिशन के जरिए इसरो चांद पर पानी की खोज करेगा। ये भी पता लगाएगा कि चांद की सतह पर भूकंप कैसे आते हैं।

इस मिशन से भारत को क्या हासिल होगा - इसरो के एक्स साइंटिस्ट मनीष पुरोहित कहते हैं कि इस मिशन के जरिए भारत दुनिया को बताना चाहता है कि उसके पास चांद पर सॉफ्ट लैंडिंग करने और रोवर को वहां चलाने की काबिलियत है। इससे दुनिया का भारत पर भरोसा बढ़ेगा जो कॉमर्शियल बिजनेस बढ़ाने में मदद करेगा। भारत ने अपने हेवी लिफ्ट लॉन्च व्हीकल से चंद्रयान को लॉन्च किया है। इस व्हीकल की काबिलियत भारत पहले ही दुनिया को दिखा चुका है। बीते दिनों अमेजन के फाउंडर जेफ बेजोस की कंपनी ब्लू ओरिजिन ने इसरो के रॉकेट के इस्तेमाल में अपना इंटरेस्ट दिखाया था। ब्लू ओरिजिन का इस्तेमाल कॉमर्शियल और टूरिज्म पर्पज के लिए करना चाहता है। जरिए ब्लू ओरिजिन अपने क्रू कैप्सूल को प्लान्ड लो अर्थ ऑर्बिट स्पेस स्टेशन तक ले जाएगा।

साउथ पोल पर ही मिशन क्यों भेजा गया - चंद्रमा के पोलर रीजन दूसरे रीजन्स से काफी अलग हैं। यहां कई हिस्से ऐसे हैं जहां सूरज की रोशनी कभी नहीं पहुंचती और तापमान -200 डिग्री सेल्सियस से नीचे तक चला जाता है। ऐसे में वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यहां बर्फ के फॉर्म में अभी भी पानी मौजूद हो सकता है। भारत के 2008 के चंद्रयान-1 मिशन ने चंद्रमा की सतह पर पानी की मौजूदगी का संकेत दिया था। इस मिशन की लैंडिंग साइट चंद्रयान-2 जैसी ही है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास 70 डिग्री अक्षांश पर। लेकिन इस बार एरिया बढ़ाया गया है। चंद्रयान-2 में लैंडिंग साइट 500 मीटर एक्स 500 मीटर थी। अब, लैंडिंग साइट 4 किमी एक्स 2.5 किमी है। अगर सब कुछ ठीक रहा तो चंद्रयान-3 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास सॉफ्ट-लैंडिंग करने वाला दुनिया का पहला स्पेसक्राफ्ट बन जाएगा। चंद्रमा पर उतरने वाले पिछले सभी स्पेसक्राफ्ट भूमध्यरेखीय क्षेत्र में, चंद्र भूमध्य रेखा के उत्तर या दक्षिण में कुछ डिग्री अक्षांश पर उतरे हैं।

इस बार लैंडर में 5 की जगह 4 इंजन क्यों - इस बार लैंडर में चारों कोनों पर लगे चार इंजन (थ्रस्टर) तो हैं, लेकिन पिछली बार बीचो-बीच लगा पांचवां इंजन हटा दिया गया है। फाइनल लैंडिंग दो इंजन की मदद से ही होगी, ताकि दो इंजन आपातकालीन स्थिति में काम कर सकें। चंद्रयान 2 मिशन में आखिरी समय में पांचवां इंजन जोड़ा गया था। इंजन इसलिए हटाया गया है, ताकि ज्यादा फ्यूल साथ ले जाया जा सके।

14 दिन का ही मिशन क्यों - मनीष पुरोहित ने बताया कि चंद्रमा पर 14 दिन तक रात और 14 दिन तक उजाला रहता है। जब यहां रात होती है तो तापमान -100 डिग्री सेल्सियस से भी कम हो जाता है। चंद्रयान के लैंडर और रोवर अपने सोलर पैनल्स से पावर जनरेशन करेंगे। इसलिए वो 14 दिन तो पावर जनरेट कर लेंगे, लेकिन रात होने पर पावर जनरेशन प्रोसेस रुक जाएगी। पावर जनरेशन नहीं होगा तो इलेक्ट्रॉनिक्स भयंकर ठंड को झेल नहीं पाएंगे और खराब हो जाएंगे।

आईआरसीटीसी के नकली एप से हो रही धोखाधड़ी, निजी जानकारी हो सकती है लीक

नई दिल्ली।

अगर आप रेलवे टिकट बुक करने के लिए आईआरसीटीसी एप का इस्तेमाल कर रहे हैं तो सावधान होने की जरूरत है। आईआरसीटीसी ने ग्राहकों को एक ईमेल भेजकर कहा है कि नकली मोबाइल एप इस समय तेजी से चल रहे हैं। इसके जरिये धोखेबाज बड़े पैमाने पर नकली लिंक भेज रहे हैं और ग्राहकों को फंसा रहे हैं। आईआरसीटीसी ने कहा है कि नकली आईआरसीटीसी रेल कनेक्ट मोबाइल एप डाउनलोड करने के लिए मैसेज आता है। ऐसे फर्जी मोबाइल एप से बचना चाहिए। उन्हें केवल गूगल प्ले या फिर एपल एप स्टोर से ही आईआरसीटीसी के एप को डाउनलोड करना चाहिए।

निजी जानकारी हो सकती है लीक

करोड़ों लोग आईआरसीटीसी के एप का उपयोग करते हैं। ऐसे में इस तरह के नकली एप से लोगों की निजी जानकारी धोखेबाजों के हाथ लग सकती है और इससे उन्हें नुकसान हो सकता है।

शेयर बाजार की शीर्ष सात कंपनियों की पूंजी में पिछले हफ्ते 74,603 करोड़ की कमी आई है। सबसे अधिक 25,011 करोड़ एचडीएफसी बैंक के पूंजीकरण में कमी आई। आईसीआईसीआई बैंक की पूंजी 12,781 करोड़, एयरटेल की 11,096 करोड़ और एचयूएल की 10,396 करोड़ घट गई।

विदेशी निवेशकों ने निकाले 3,200 करोड़ रुपये

वैश्विक बाजारों में अनिश्चतता के चलते अगस्त में विदेशी निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार से 3,200 करोड़ रुपये की निकासी की है। इससे पहले इन्होंने जुलाई, जून और मई में भारी निवेश किया था। इस साल बाजार में इन निवेशकों ने अब तक 1.26 लाख करोड़ का निवेश किया है। त्योहारों में 10 लाख के पार जा सकती है यात्री वाहनों की बिक्री त्योहारों में घरेलू यात्री वाहनों की बिक्री 10 लाख के पार हो सकती है। इस वर्ष 68 दिन के त्योहारों का मौसम 17 अगस्त से शुरू होकर 14 नवंबर तक चलेगा। मारुति सुजुकी इंडिया के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी शशांक श्रीवास्तव ने बताया, त्योहारों के दौरान बिक्री बढ़ जाती है। यह पूरे वर्ष की बिक्री का करीब 22-26 प्रतिशत होती है। उन्होंने कहा, इस वित्तीय वर्ष में यात्री वाहन की बिक्री 40 लाख रह सकती है। इस साल उद्योग में मजबूत बिक्री देखी गई और आने वाले महीनों में भी इसके जारी रहने की उम्मीद है।

सोने-चांदी में गिरावट: सोना 59 हजार और चांदी 70 हजार के नीचे आई, कैरेट के हिसाब से जानें गोल्ड की कीमत

नई दिल्ली।

सर्राफा बाजार में सोने-चांदी की कीमतों में गिरावट देखने को मिली है। इंडिया बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट के मुताबिक, सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोने के दाम 131 रुपए गिरकर 58,874 रुपए प्रति 10 ग्राम पर आ गए हैं। वहीं 22 कैरेट सोने की कीमत 53,929 रुपए रह गई है।

70 हजार के नीचे आई चांदी - वेबसाइट के अनुसार चांदी की कीमत में भी बड़ी गिरावट देखने को मिली है। ये 161 रुपए फिसलकर 69,937 रुपए प्रति किलोग्राम पर आ गई है। इससे पहले ये 70,098 रुपए पर थी।

जुलाई में सोने में रही थी तेजी - पिछले महीने, यानी जुलाई में सोने में बढ़त देखने को मिली थी। जुलाई की शुरुआत यानी 3 जुलाई (1 और 2 जुलाई को मार्केट बंद था) को ये 58,139 रुपए प्रति 10 ग्राम पर था, जो 31 जुलाई 59,567 रुपए पर पहुंच गया था। यानी इसके दाम में 1,428 रुपए की तेजी आई थी।

दो साल में 27प्रतिशत रिटर्न दे सकता है सोना - केडिया एडवायजरी के डायरेक्टर अजय केडिया

के अनुसार कुछ महीने हल्की राहत के बाद एक बार फिर महंगाई बढ़ने लगी है। इसे कम करने के लिए अमेरिका और यूरोप में ब्याज दरें बढ़ाने का सिलसिला जारी है। इस बीच शेयर बाजार तेजी के सारे रिकॉर्ड तोड़ने के बाद मुनाफा वसूली के दबाव में है। इससे सोने में निवेश की जमीन तैयार हो रही है। दो साल में यह 27प्रतिशत से ज्यादा रिटर्न दे सकता है। वायदे में सोना अभी 60,000 रुपए और सर्राफा बाजार में 59,500 रुपए से नीचे है। इस साल यह 65,000 और जून 2025 तक 75,000 रुपए प्रति 10 ग्राम तक पहुंच सकता है। अभी निवेश करने पर दो साल में सोना 27प्रतिशत रिटर्न दे सकता है।

राकेश झुनझुनवाला ने 5 हजार के निवेश से खड़ा किया 40 हजार करोड़ का एम्पायर, इन्हें मानते थे गुरु

नई दिल्ली।

भारत के वारेन बफेट कहलाने वाले राकेश झुनझुनवाला की पहली पुण्यतिथि है। उनका निधन 14 अगस्त 2022 को हो गया था। राकेश झुनझुनवाला एक ऐसे दिग्गज निवेशक थे जिनको भारत के विकास की कहानी और अर्थव्यवस्था पर पूरा भरोसा था। वे मानते थे कि 21वीं सदी का आने वाला समय भारत का ही है। अपनी समझदारी भरी निवेश रणनीतियों के कारण झुनझुनवाला अपने पीछे 40 हजार करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति छोड़ गए थे। शेयर बाजार के बारे में उनकी दमदार समझ के कारण उन्हें भारतीय शेयर बाजार का बिग बुल कहा गया। राकेश झुनझुनवाला कहते थे, बाजार में कोई किंग नही होता और जो किंग होता है उसको बाजार जल्दी देख लेता है। मुम्बई में 5 जुलाई 1960 को जन्मे राकेश झुनझुनवाला के पिता एक इनकम टैक्स अधिकारी थे। बचपन से ही राकेश के मन में शेयर बाजार

को समझने की जिज्ञासा थी। साल 1985 में अपनी सीए की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने स्टॉक मार्केट में अपना भविष्य आजमाया। वो दौर भी ऐसा था जिस समय भारत ग्लोबलाइजेशन और उदारीकरण की तरफ बढ़ रहा था। यह कॉर्पोरेट जगत में एक बड़ा बूम स्टार्ट होने वाला था। राकेश झुनझुवाला ने साल 1985 में महज 5000 रुपये की पूंजी के साथ शेयर बाजार में अपने सफर की शुरूआत की। सितंबर 2018 में उनकी पूंजी बढ़कर 11,000 करोड़ रुपये हो गई। फोर्ब्स पत्रिका के अनुसार उस समय संपत्ति के मामले में वे भारत के सबसे अमीर लोगों की लिस्ट में 48वें नंबर पर थे। जुलाई 2022 में उनका नेटवर्थ करीब 550 बिलियन डॉलर (भारतीय रुपयों में करीब 55000 करोड़ रुपये) है। वे देश के अमीरों की सूची में 36 वें नंबर पर थे। शेयर बाजार में झुनझुनवाला को हमेशा एक रिस्क लेने वाला ट्रेडर माना गया। बताया जाता है कि उन्होंने अपने भाई के ग्राहकों से यह कहकर पैसे लिए थे कि वे उन्हें फिक्स्ड डिपॉजिट से अधिक का रिटर्न देंगे और उन्होंने ऐसा करके दिखाया था। झुनझुनवाला ने जिस समय अपना करियर शुरू किया, उस समय उनके पास पैसे नहीं थे। अपने भाई के सहयोग से उन्हें 2 क्लाइंट मिले जिन्होंने झुनझुनवाला पर भरोसा दिखाया और 7.5 लाख का निवेश किया। यहीं से उनका करियर स्टार्ट हुआ। 1986 में सबसे पहले मुनाफा उन्होंने टाटा टी में कमाया। 43 रु. पर उन्होंने 5000 शेयर खरीदकर उसको 3 महीने में 143 में बेचा। 5 लाख का प्रॉफिट उस समय बड़ा पैसा होता था।

तीन महीने की गिरावट के बाद बढ़ी थोक महंगाई

जुलाई में बढ़कर -1.36प्रतिशत पर पहुंची, जून में ये 8 साल के निचले स्तर पर थी

नई दिल्ली।

जुलाई महीने में थोक महंगाई दर यानी होलसेल प्राइस इंडेक्स बढ़कर -1.36प्रतिशत पर पहुंच गई है। लगातार तीन महीने की गिरावट के बाद डब्लूपीआई में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। इससे पहले जून में ये -4.12प्रतिशत पर आ गई थी। ये उसका 8 साल का निचला स्तर था। वहीं एक साल पहले यानी जुलाई 2022 में ये 13.93प्रतिशत पर थी।

खाने-पीने की चीजें महंगी होने से बढ़ी महंगाई - जुलाई में थोक महंगाई दर बढ़त का मुख्य कारण सब्जियों, प्याज और प्राथमिक वस्तुओं का महंगा होना है। जुलाई में प्राथमिक वस्तुओं की महंगाई बढ़कर 7.57प्रतिशत पहुंच गई, जो जून में -2.87प्रतिशत पर थी। वहीं जुलाई में सब्जियों की महंगाई -21.98प्रतिशत से बढ़कर 62.12प्रतिशत पर पहुंच गई है। इसके अलावा प्याज की महंगाई -4.31प्रतिशत से बढ़कर 7.13प्रतिशत हो गई है। मैन्युफैक्चर्ड प्रोडक्टस की थोक महंगाई -2.71प्रतिशत से बढ़कर -2.51प्रतिशत रही। हालांकि जुलाई में ईंधन और

बिजली की महंगाई दर जून के -12.63प्रतिशत से घटकर -12.79प्रतिशत पर रही है। वहीं आलू की महंगाई दर जून के -21.27प्रतिशत से घटकर -24.40प्रतिशत पर आ गई। इसी तरह अंडे, मांस और मछली की महंगाई जून के 2.74प्रतिशत से घटकर 1.79प्रतिशत पर रही है।

डब्लूपीआई का आम आदमी पर असर - थोक महंगाई के लंबे समय तक बढ़े रहने से ज्यादातर प्रोडक्टिव सेक्टर पर इसका बुरा असर पड़ता है। अगर थोक मूल्य बहुत ज्यादा समय तक ऊंचे स्तर पर रहता है, तो प्रोड्यूसर इसका बोझ कंज्यूमर्स पर डाल देते हैं। सरकार केवल टैक्स के जरिए डब्लूपीआई को कंट्रोल कर सकती है। जैसे कच्चे तेल में तेज बढ़ोतरी की स्थिति में सरकार ने ईंधन पर एक्साइज ड्यूटी कटौती की थी। हालांकि, सरकार टैक्स कटौती एक सीमा में ही कम कर सकती है। डब्लूपीआई में ज्यादा वेटेज मेटल, केमिकल, प्लास्टिक, रबर जैसे फैक्ट्री से जुड़े सामानों का होता है।

निगेटिव मंहगाई से भी प्रभावित होती है इकोनॉमी - महंगाई का निगेटिव में रहना भी इकोनॉमी पर प्रभाव डालता है। इसे डिफ्लेशन कहा जाता है। निगेटिव महंगाई तब होती है वस्तुओं की आपूर्ति उन वस्तुओं की मांग से ज्यादा हो जाती है। इससे दाम गिर जाते हैं और कंपनियों का प्रॉफिट घट जाता है। प्रॉफिट घटता है तो कंपनियां वर्कर्स को निकलाती हैं और अपने कुछ प्लांट या स्टोर भी बंद कर देती हैं।

महंगाई कैसे मापी जाती है - भारत में दो तरह की महंगाई होती है। एक रिटेल, यानी खुदरा और दूसरी थोक महंगाई होती है। रिटेल महंगाई दर आम ग्राहकों की तरफ से दी जाने वाली कीमतों पर आधारित होती है। इसको कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स भी कहते हैं। वहीं, होलसेल प्राइस इंडेक्स का अर्थ उन कीमतों से होता है, जो थोक बाजार में एक कारोबारी दूसरे कारोबारी से वसूलता है। ये कीमतें थोक में किए गए सौदों से जुड़ी होती हैं। दोनों तरह की महंगाई को मापने के लिए अलग-अलग आइटम को शामिल किया जाता है। जैसे थोक महंगाई में मैन्युफैक्चर्ड प्रोडक्ट्स की हिस्सेदारी 63.75प्रतिशत, प्राइमरी आर्टिकल जैसे फूड 20.02प्रतिशत और फ्यूल एंड पावर 14.23प्रतिशत होती है। वहीं, रिटेल महंगाई में फूड और प्रोडक्ट की भागीदारी 45.86प्रतिशत, हाउसिंग की 10.07प्रतिशत, कपड़े की 6.53प्रतिशत और फ्यूल सहित अन्य आइटम की भी भागीदारी होती है। भारत में डब्लूपीआई तो अमेरिका में पीपीआई से मापते हैं महंगाई डब्लूपीआई का इस्तेमाल भारत में महंगाई को मापने के लिए किया जाता है।